आज पुण्य तिथि पर विशेष

हरियाणा के दूसरे गांधी थे बाबू मूलचन्द जैन

अर्थ प्रकाश संवाददाता

करनाल, 12 सितम्बर। आज से 85 वर्ष पूर्व हरियाणा की पावन धरती सोनीपत जिला के गांव सिकन्दरपुर माजरा में लाला मुरारी लाल के घर जन्मे उच्चतर कोटि के स्वतन्त्रता सेनानियों में निस्वार्थ भाव, निष्ठा व निडरता में स्वर्गीय बाबू मूलचन्द जैन, जिनकी आज हम पुण्य तिथि मना रहे हैं, का असाधारण स्थान रहा है। आज जब कि छोटे बड़े लगभग सभी राजनीतिज्ञ भ्रष्टाचार में उपर से नीचे व नीचे से उपर तक पूर्ण रूप से लिप्त हैं, जिनके जीवन में मर्यादाओं व नैतिक मूल्यों का कोई स्थान नहीं है, जो स्वार्थ सिद्धि के लिये किसी भी सीमा को निसंकोच लांघ सकते हैं, जो भाई-भतीजावाद व परिवारवाद को बढ़ावा देने के लिये भोली जनता को जात बिरादरी, सम्प्रदाय भाषा व धर्म के नाम पर टुकड़ों-टुकड़ों में बांटने में गौरव अनुभव करते हैं, ऐसे समय में हरियाणा ही नहीं राष्ट्र की राजनीति के क्षितिज पर राजनीति में नैतिक मूल्यों को स्थापित करके प्रदीप्तमान सूर्य की तरह प्रकाश फैलाने वाले प्रकाशपुंज को उनकी पुण्य तिथि पर याद करना हमारा गौरव है।

कई वर्ष पूर्व महान् वैज्ञानिक अलबर्ट आईस्टाईन ने हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के बहुमुखी व्यक्तित्व उनके जीवन की सरलता, तेजस्विता तथा बेजोड़ नेतृत्व क्षमता से ओतप्रोत होकर कहा था कि "भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को यह विश्वास करना कठिन होगा कि गांधी जैसा कोई हाड़-मांस का व्यक्ति इस धरती पर सचमुच ही कभी रहा होगा"।

आज पूज्य बाबू जी जिनको हरियाणा का गाधी माना जाता है, के बहुआयामी जीवन, उनकी सोच, उनकी जीवन शैली, समाज, राष्ट्र व मानवता के प्रति उनका सतत् व गहन चिन्तन समाज में रूढ़िवादीगत व परम्परागत बुराईयों को दूर करने के लिये उनका संघर्ष, उच्च से उच्चतर हस्ती से टकराव लेने की अनोखी क्षमता व अदम्य साहस, कई महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन रहने के बावजूद उनके जीवन में असीम सादगी, निष्कपटता व नैतिक मूल्यों को जीवन के प्रत्येक पहलू में स्थापित किये रखने की वचन और कर्मबद्धता, जीवन के सान्ध्य में भी अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध अपनों से भी टक्कर लेकर दनदनाती गोलियों ... देने की कला व क्षमता तथा जीवन के अन्तिम क्षणों तक सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारत की असंख्य बलिदानों के बाद मिली आज़ादी को कायम रखने के लिये हरियाणा में आजादी बचाओ आन्दोलन के प्रणेता के रूप में बेजोड़ योगदान देने वाला व्यक्तित्व कैसा अद्भुत रहा होगा? कल्पना भी करना कठिन होगा भविष्य में किसी के लिये भी। ऐसा शख्स जिसने भ्रष्ट राजनीति व भ्रष्ट अफसरशाही तथा संवेदना शून्य बुद्धिजीवियों के बीच रहते हुए भी अपने आपको भ्रष्टाचार व अनैतिक मूल्यों से पूर्णतया दूर रखा हो, बाबू जी के बारे में यह राय उनके प्रशंसकों की ही हो, ऐसी बात नहीं थी, उनके कट्टर राजनीतिक विरोधी भी उनके प्रति यही राय रखते हैं।

असंख्य राजनीतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, बुद्धिजीवी, प्रशासक, पत्रकार व उच्च से उच्च पद पर आसीन आला अफसर तक सभी वर्गों ने उनकी हीरक जयन्ती के अवसर पर तथा उनके स्वर्गवास के बाद अपने उद्गार प्रकट करते हुए किसी न किसी रूप में इससे भी ज्यादा कहा है। छतरपुर (महरौली) में अध्यात्म साधना केन्द्र व लाडनु (राजस्थान) में जैन विश्व भारती, अनुव्रत व तेरह पंथी के संस्थापक विश्वविख्यात जैन संत स्वर्गीय गुरुदेव तुलसी ने बाबू जी की हीरक जयन्ती पर जो आशीवचन भेजे वे शब्द आज के गुमराह नेता व जनता सभी के लिये कभी न भुलाने वाले उद्गार हैं कि **"मूलचन्द जी वर्षों से राजनीति में हैं। काज़ल की कोठरी में रह कर भी उनका उसकी कालिख से अपने आप को बचाकर रखना असाधारण है। उन जैसे छलकपट और मोह माया से दूर राजनीति के क्षेत्र में बिरले ही मिलेंगे"।**

बाबू जी स्वयं एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे, और एक अत्यन्त साधन हीन छोटे से गाँव में पले, पढ़े और बड़े हुए। जीवन के आरम्भिक वर्षों से ही अथक परिश्रम व संघर्ष करना पड़ा उन्हें कदम-कदम पर। पांचवीं श्रेणी के बाद ही उच्च शिक्षा के लिए 5-6 किलोमीटर पैदल चल कर गोहाना जाते, चिलचिलाती धूप में वापिस आते, घर में दो भाईयों में बड़ा होने के नाते पिता के साथ घरेलू कार्यों में जुट जाते। लालटेन में रात को पढ़ना और सुबह वही कार्यक्रम। हाई स्कूल से इंटर कॉलेज रोहतक, वहाँ से स्नातक की पढ़ाई के लिये लाहौर और फिर अन्त में कानून की परीक्षा। शिक्षा के क्षेत्र में यह सभी सोपान होनहार बालक ने अपने दम पर हमेशा प्रथम रहने पर छात्रवृत्ति प्राप्त करके पार किये। कानून की परीक्षा में तो पूर्व अविभाजित पंजाब में प्रथम रहने पर स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया। गोहाना वापिस आ कर वकालत की प्रैक्टिस आरम्भ की और साथ ही कूद पड़े स्वतन्त्रता आन्दोलन में। 1939 में जमींदारा लीग के सदस्यों ने (जो आन्दोलन के विरोधी थे) गोहाना में जलसे करने के कारण उन्हें मार-मार कर घायल कर दिया। 6 मार्च 1941 को अपने जन्म स्थान सिकन्दरपुर माजरा से गांधी जी की पुकार पर व्यक्तिगत सत्याग्रह के अन्तर्गत पहली व अन्तिम गिरफ्तारी देकर अपने जिले का ही नहीं वरन हरियाणा का नाम रोशन किया स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में। यहां यह बात विशेष तौर पर उल्लेखनीय है कि व्यक्तिगत सत्याग्रह में वही लोग भाग ले सकते थे जो गांधी जी की 11 शर्तों पर पूर्ण उत्तर सकते थे। बाबू जी विद्यार्थी काल से ही लगभग इन सभी नियमों का पहले से ही अनुकरण करते थे इसलिये इन्हें यह नियम मानने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई और गांधी जी ने सारी जांच के बाद उन्हें गिरफ्तारी देने की सहर्ष अनुमति दे दी। बाबू जी गदगद हो गये और मां-बाप के विरोध के बावजूद गिरफ्तारी देकर फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा। वे आजादी आन्दोलन में पूर्णतया कूद पड़े। बच्चों की परवाह किये बिना वे समस्त जीवन आन्दोलन को सफल बनाने तथा गाँव-गाँव पैदल व साईकिल पर घूम-घूम कर बच्चों, बूढ़ों व जवानों को प्रेरित करते रहे।

गौरतलब है कि बाबू जी ने जो कुछ भी किया, जहाँ कहीं भी रहे, जिस किसी भी पद पर रहे, उनके जीवन के आदर्श कायम रहे। फिर चाहे उनका अपना वकालत का पेशा हो या जेल हो या समाज में कोई किसी के प्रति अन्याय के विरुद्ध लड़ाई हो या आज़ादी के बाद विधान सभा या लोक सभा के सदस्यकाल में या फिर सरकार में मन्त्री पद या विरोधी पक्ष के नेता के रूप में रहे हों, हमेशा सौम्यता, शालीनता, मेहनत व ईमानदारी भाव से अपने आदर्शों एवं मर्यादाओं का पालन जीवन के अन्तिम क्षण तक करते रहे। यही कारण है कि उनके राजनैतिक कट्टर से कट्टर विरोधी भी उनका अन्त तक सम्मान करते रहे और उनकी बात को कभी टालने का साहस नहीं कर सके।

बाबू जी का जीवन जनतान्त्रिक मूल्यों की रक्षा का एक ज्वलन्त तथा सशक्त उदाहरण है। वे 82 वर्ष के होकर स्वर्ग सिधार गये। किन्तु अन्त तक उनके जीवन रथ की चेतना तथा उर्जा दोनों ही अतुलनीय थी। 'उच्च कोटि का क्रान्तिकारक विचारक', 'सच्चा मानवतावादी', 'मूल्यपरायण राजनीतिज्ञ', 'ऊंच-नीच व जात-पात रहित समाज बनाने के स्वप्नद्रष्ठा', 'हरियाणे का गांधी', 'संवेदनशील व्यक्ति' आदि बाबू जी के पर्यायवाची शब्द बन गए थे मानों। कई प्रसिद्ध पत्रकारों के शब्दों में हरियाणा व हरियाणा वासियों की समस्याओं के प्रति बाबू जी की संवेदनशीलता मात्र औपचारिक नहीं थी वरन् बराबर उनका यह प्रयास रहा कि जनसमस्याओं का समाधान मानवीय पहलू से किया जाए। संविधान में बदलाव हेतु भी बाबू जी ने लगभग 4-5 वर्ष पूर्व सभी राजनैतिक नेताओं को पत्र लिखकर संविधान में बदलाव के सुझाव दिये थे।

वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री वाजपेयी जी भी तो आतंकवाद की समस्या 'इन्सानियत के दायरे में' करना चाहते हैं। यदि आज 50 प्रतिशत राजनीतिज्ञ, प्रशासक, अफ्सर व बुद्धिजीवी भी इन्सानियत दायरे व मानवीय पहलू की दृष्टि से सोचने व कार्य करने लगें तो यह देश विश्व में उज्ज्वल भविष्य का अधिकारी स्वयं हो जाएगा। हम अपने जीवन में उस मानवीय पहलू को प्राथमिकता दें यही बाबू जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

downlaoded from moolchandjain.org